शोध सारांश

प्रस्तुत लघु शोध **“महात्मा गाँधी और वीर सावरकर के राष्ट्र सम्बन्धी विचारो का तुलनात्मक अध्ययन”** में उन तथ्यों पर विचार किया गया है, जिस आधार पर महात्मा गाँधी और वीर सावरकर के राष्ट्र सम्बन्धी विचारों का विश्लेषण किया जाता है. इसके सन्दर्भ में विद्वानों के उस विचारों को नोट किया गया है, जो इन महापुरुषों के राष्ट्र सम्बन्धी विचार से सम्बन्ध रखते हैं, साथ ही साथ इनके समकालीन राष्ट्रीय नेताओं का भी उल्लेख किया गया है जो विचारधाराओं के आधार पर एक दुसरे के खेमें में बटे हुए थे.

“हिन्दू राष्ट्रवादी” मानते हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद नेशन- स्टेट से भिन्न है. इसलिए इसके विकास पर भारतीय दृष्टिकोण से ही विचार करना चाहिए. ये मानते हैं कि, भारतीय संस्कृति ने दूसरे देशों को अपनी संस्कृति से प्रभावित किया है. भारतीय संस्कृति विशिष्ठ है. कौशाम्बी लिखते है “भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है अपने ही देश में इसकी निरंतरता” जिस भूखण्ड में हजारों वर्ष से एक सदा प्रवाहित संस्कृति विद्मान है और सारी दुनिया को भी प्रवाहित करती है उसे राष्ट्र का नाम देना ही उचित होगा. सावरकर के ‘हिंदुत्व’ के विचार में “हिंदू राष्ट्रवादी” नेताओं ने परिवर्तन भी किया है. और बहुत चालाकी से ‘इस्लाम धर्म’ को छोड़ कर अन्य धर्म को एक साथ मिलाने की कोशिश भी करते है और भारत को एक “हिन्दू राष्ट्र” बनाने का निरंतर कोशिश भी किया गया है. जबकि गाँधीजी धर्म को निजी जीवन तक रखने की वकालत करते थे वे हिन्दू धर्म को स्वीकार करते थे, लेकिन राष्ट्र के सन्दर्भ में धर्मनिरपेक्ष रहने की बात भी करते थे, एक शब्द में कहें तो गाँधीजी धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक, समतावादी,बहुलवादी राष्ट्र की वकालत करते थे.